प्राकृतिक संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका (उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 नीता भारती*

संक्षिप्त सार

पर्यावरण शब्द 'परि' उपसर्ग के साथ आवरण शब्द के संयोग से बना है। परि का अर्थ है चारों ओर या परिधि। आवरण का अर्थ है आच्छादन, किसी वस्तु पर लपटा गया वस्त्र तथा घेरा आदि। पर्यावरण शब्द अंग्रेजी भाषा के ''इनवायरमेंट'' शब्द का पर्याय है। पर्यावरण अर्थात हमारे चारों ओर विद्यमान जीवन दायी प्राकृतिक आवरण है। पर्यावरण कुछ मूल भूत तत्वों से मिलकर बना है – भूमि, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति तथा जीव–जन्तु। मानव–जीवन के आधार भूत तत्वों का निर्माण प्रकृति से ही होता है। वस्तुतः मानव और पर्यावरण सगे भाई है। परंतु पर्यावरण बड़ा भाई है। पर्यावरण के तीन मंडल–वायुमंडल, जलमंडल व भूमंडल ये तीनों मिलकर पृथ्वी पर जीवन का निर्माण संभव बनाते हैं। मानव जीवन का आरंभ और अंत जीवन और मृत्यु दोनों ही इन्हीं प्राकृतिक तत्वों पर आधारित है। आदिकाल से विकास के इस रफ्तार भरे दौर में भी पर्यावरण में जीवन दायी इन तत्वों का सन्तुलित मात्रा में विद्यमान होना अति आवश्यक है। किसी भी एक तत्व की कमी होने पर जीवन की कल्पना असम्भव हो जायेगी। इस शोध पत्र में पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का भूमिका का विश्लेषण है।

मुख्य शब्द–पर्यावरण, आवरण, संरक्षण, संसाधन।

प्रस्तावना

इस तरह हमारे चारों ओर का आवरण, वातावरण एवं सजीव–निर्जीव घटकों के सम्मिलित रूप का नाम ही पर्यावरण है। प्रो0 ए0एन0 पुरोहित ने पर्यावरण के विषय में लिखा ''पर्यावरण विभिन्न आत्मनिर्भर घटकों सजीव एवं निर्जीव के मध्य सामंजस्य एवं पूर्णता प्रकृति की अवधारणा है।'' पर्यावरण के निर्जीव घटक पाँच हैं। मिट्टी, जल, अग्नि, वायु एवं अंतरिक्ष 'गगन'। सजीव घटक में मनुष्य जीव जन्तु एवं समस्त प्राणी जगत आता है, और जहाँ इन घटकों में अन्तर्विरोध या असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो वहाँ पर्यावरण असंतुलन की समस्या पैदा हो जाती है। जब हम पर्यावरण के संरक्षण की बात करते हैं तो हमें वनों के संरक्षण की चिन्ता करनी चाहिए। क्योंकि वन संरक्षण से ही प्राकृतिक संरक्षण को सुरक्षित रखा जा सकता है। पेड़ पौधों व वनस्पति का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वन, पेड़–पौधे, वनस्पति जीव–जन्तु के ऐसे आश्रय स्थल हैं जो प्राकृतिक संसाधन के महत्वपूर्ण घटक के रूप जाने जा सकते हैं। इसीलिए ''वन ही जीवन है'' कहा जाता है। इस शोध पत्र में अनवेषणत्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। वनों के द्वारा ही हमें प्राण वायु शुद्ध ऑक्सीजन प्राप्त होती है और वायुमण्डल की कॉर्बन डाई आक्साइड को अवशोसित करते हैं। लेकिन अपनी भौतिक सुख सुविधा के चलते वनों के निरन्तर कटान से प्राकृतिक संरक्षण का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। इसे बचाने के लिए अधिक से अधिक मात्रा में वृक्षारोपण की आवश्यकता है। वृक्ष के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा जाता है –

वृक्ष है धरा के भूषण,
दूर करे प्रदूषण

वृक्ष हमारी अभूतय निधि है। द्वितीय राष्ट्रीय वन नीति के अनुरूप 33 प्रतिशत वनक्षेत्र तक वनों का विस्तार करने के लिए अधिकतम मात्रा में वृक्षारोपण एवं जनचेतना करना जरूरी है। प्राकृतिक संरक्षण एवं पर्यावरण संतुलन के लिए निम्नांकित वार्ता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

1– जंगल न काटे जायं तथा राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य की संख्या व क्षेत्रफल में वृद्धि की जाय, साथ ही वहाँ घरेलू जानवरों की चराई पर रोक लगायी जाय।
2– अवैध शिकार तथा चर्म–निर्मित व हाथी–दाँत से बनी वस्तुओं की खरीद–फरोख्त पर प्रतिबंध लगाया जाय।

* प्रवक्ता, राजनीतिशास्त्र विभाग, कु0वि0, एस0एस0जे0 परिसर, अल्मोड़ा।

बनायी जायं।

4– पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जाय। कीटनाशक दवाइयों, विषैले रसायनों का प्रयोग बंद हो, समुद्री जहाजों से तेल के रिसाव को रोका जाय तथा वनों को आग से बचाने के ठोस उपाय किए जायं, तभी जाकर वन्य–जीवों की सुरक्षा हो सकती है।

मानवीय आर्थिक विकास तथा पर्यावरणीय संरक्षण

इन दोनों का संतुलन जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है। क्योंकि बिना प्राकृतिक संसाधनों के कोई देश आर्थिक प्रगति नहीं कर सकता है। लेकिन इनका उपयोग उस सीमा तक ही होना चाहिए जिनमें कि ये दीर्घकाल तक अपने वास्तविक तत्व को यथावत् बनाये रख सकें। मानव ने नदियों पर बाँध बनाकर बिजली उत्पन्न की, खेतों में सिचाई के लिए पानी का प्रयोग किया, वनों को साफ कर पहाड़ों को काट कर नगर बसाये, भूमि की उर्वरा शक्ति बढाने के लिए अनेक प्रकार के रासायनिकों का प्रयोग किया। क्रमशः अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाता गया और प्रकृति की नैसर्गिक सीमाओं का अतिक्रमण करने लगा। जब आवश्यकता से अधिक संसाधनों का दोहन जारी रहता है तो पर्यावरण में असन्तुलन उत्पन्न होने लगता है। परिणामस्वरूप मानव प्राकृतिक आपदाओं का तेजी से शिकार बनने लगता है और इस अवस्था में उसकी सभी बुद्धिमता जड़ हो जाती है।

कालमार्क्स ने कहा है कि– ''प्रकृति के प्रति मानव के शत्रुतापूर्ण व्यवहार से ही पर्यावरण में असन्तुलन होता है, यदि प्रकृति के साथ संयम का व्यवहार किया जाय तो छोटी–छोटी क्षति की पूर्ति वह स्वयं कर लेती है।'' गाँधी जी ने कहा था– प्रकृति हमारी आवश्यकतों को तो पूरा कर सकती है परन्तु हमारे लालच को नहीं। विद्वान चाणक्य ने कहा था– ''राज्य की स्थिरता पर्यावरणीय संरक्षण पर ही आधारित है।'' प्राचीन ऋषि –मुनियों ने कहा है– 'प्रकृति हमारी माँ है जो अपना सब कुछ अर्पण कर देती है। यह महानगरों की सौगात है, जो सम्पूर्ण मानव–जाति के आगामी अमंगल की स्पष्ट सूचना है। प्राचीन काल में पर्यावरण संरक्षण जैसी कोई समस्या नहीं थी। कारण उस समय जनसंख्या का ऐसा भयानक विस्फोट नहीं था। लोगों की आवश्यकताएं सीमित थीं। यह समस्या 19वीं से 20वीं शताब्दी की देन है, जो निरन्तर घटने की अपेक्षा बढ़ती जा रही है। कारण मानव छोटे सुख के लिए दीर्घ कालिक प्रकृति संसाधनों का लगातार दोहन कर रहा है। इस समस्या के निरन्तर बढ़ने का प्रमुख कारण जनसंख्या–वृद्धि, औद्योगिक प्रगति, भौतिकवादी रहन–सहन का बढ़ता बाजार है।

अर्न्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उत्तराखण्ड का पर्वतीय क्षेत्र 49.100 वर्ग किमी0 है। नई बनी नियमावली के अनुसार वन पंचायत के नौ सदस्यों में से चार महिला सदस्यों का होना अनिवार्य है। उत्तरांचल की वन पंचायत व्यवस्था देश में अपनी तरह की अकेली व्यवस्था है जिसे वनों का प्रबन्धन और वन उत्पादों का उपयोग का अधिकार ब्रिटिशकाल से मिला हुआ है। उत्तराखण्ड जो कि मूल रूप से शान्त, सुन्दर, कलामय सौन्दर्य की धरती है। देखते ही देखते आज यह भी मैदानी गति में परिवर्तित होती जा रही है। निरन्तर कटते चीड़–देवदार के वर्षों–वर्ष स्थिर रहने वाले वृक्ष, यातायात के साधनों की अंधाधुध भरमार, आधुनिकता की अंधी–दौड़ ने धीरे–धीरे यहाँ के शान्तिपूर्ण सौन्दर्य को रौंदना शुरू कर दिया है, समय रहते यदि इसे संभाला ना गया तो भारत भूमि के मैदानी क्षेत्र एक आग का गोला बन जायेंगे। क्योंकि, भारत देश के यह पर्वतीय क्षेत्र जो वर्ष भर बर्फ से ढकी चोटियों का दर्शन कराते रहते हैं। इनके माध्यम से ही वर्षा और शीत का सन्तुलन पूरे देश में बना रहता है। यदि वहीं से वृक्षों की कतार नष्ट हो जायेगी, जलाशय सूख जायेंगे, बर्फ की चोटियाँ पिघलने लगेंगी, ऊँचे खड़े पर्वत शिखरों को रौंद कर बहुमंजिली इमारतें खड़ी कर दी जायेंगी, तो आने वाले नौनिहाल भारत के भविष्य के लिए हम क्या धरोहर छोड़कर जायेंगे। आज इस प्रश्न का उत्तर हम सभी को अपने –अपने स्तर से तलाशना ही होगा।

इस समस्या का समाधान स्त्री–पुरूष, युवा–बुजुर्ग, वैज्ञानिक और कलाकार सबको अपने–अपने ढंग से ढूँढना होगा। जन–क्रांति के बिना अब इस पर्यावरण का संरक्षण असम्भव है। महिलाएं जो कि, आज हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही हैं, उनकी भूमिका आज पर्यावरण के संरक्षण हेतु और अधिक बढ़ जाती है। इन्हें बच्चों को बाल्यावस्था से ही प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता और रख–रखाव के बारे में जागरूक करना होगा। अपनी आवश्यकता को भौतिकवादी न बनाकर ज्यादा से ज्यादा प्रकृतिवादी बनाना ही होगा। महिलाएं, जिनके द्वारा आरम्भ से कला– संस्कृति और धर्म की रक्षा होती रही है, उन्हें आज भी पहले घर से, फिर समाज और देश में विभिन्न माध्यमों से प्रकृति के जीवनदायी तत्वों के दुरूपयोग को रोकने के लिए बड़े –बुजुर्ग और बच्चों को प्रेरित करना चाहिये।

कला संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है जो मानव मन को दर्शन मात्र से प्रभावित कर लेता है। समय–समय पर पर्यावरण संरक्षण से जुड़े विभिन्न समस्याओं को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य कलाकार पोस्टर लगाकर, चित्र बनाकर, नाट्कों द्वारा रोचक ढंग से, आम –जनसमूह के मध्य मंचन करके, पर्यावरण संरक्षण का जन जागृती अभियान चला कर देश

तथा समाज को जागरूक बनाने का पुनीत कार्य कर सकता है। अतः आज आवश्यक है कि औद्योगिक विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण भी किया जाय तभी वास्तविक प्रगति सम्भव होगी। सरकार भी अब इस ओर बेहद सक्रिय हो गयी है। वर्तमान समय में अनेक शिखर सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। स्कूल और महाविद्यालयों में पर्यावरण संरक्षण को अनिवार्य विषय के रूप में भी पढ़ाया जा रहा है। तो इस अवस्था में यदि प्रत्येक व्यक्ति एक–एक पेड़ लगाए तो पर्यावरण संरक्षण में काफी सहायता मिल सकती है। संक्षेप में यह है कि प्राकृतिक संसाधन हमारी अमूल्य निधि है। अतः इनकी रक्षा करना हम सब का प्रथम मूल कर्तव्य है।

उत्तरांचल में वनों के संरक्षण में महिलाओं की अत्यधिक प्रशंसनीय भूमिका रही है। इसके लिए उन्होंने नम्रता और आन्दोलन दोनों तरह के कार्य किये। आज भी हम उत्तरांचल के चिपको आन्दोलन में महिलाओं की सशक्त भूमिका को भुला नहीं सकते जो 1 मार्च 1973 को गढ़वाल के चमोली जनपद के गोपेश्वर नामक स्थान से शुरू हुआ। लेकिन जब सन् 1974 में इलाहाबाद की साइमन स्पोर्टस गुड्स फैक्टरी के मजदूर पेड़ों को काटने के लिए आये तब उसके विरोध में ही रैणी गाँव में चिपको आन्दोलन का जन्म हुआ। 1974 में जोशीमठ से 65 कि0मी0 दूर रैणी गाँव की महिलाओं का नेतृत्व गौरा देवी ने किया जिसमें कमला पन्त, बाली देवी आदि ने उल्लेखनीय योगदान दिया। जोशीमठ चमोली गढ़वाल में पर्यावरण संरक्षण हेतु बाली देवी ने अक्टूबर 2004 में संयुक्त संघ के यूनाइटेड नेशन्स इन्वायरमेट प्रोगाम के अन्तर्गत नैरोबी में ग्लोबल असेम्बली ऑफ वूमन ऑन इन्वायरमेंट विषय पर व्याख्या दी। पर्यावरण संरक्षण हेतु अपने व्याख्यान के माध्यम से देश एवं विदेशों तक सभी का ध्यान केन्द्रित किया। पर्यावरण के संरक्षण हेतु संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1992 में रियो–दि–जेनारो में पर्यावरण पर हुए, सम्मेलन जिसे अर्थ समिट के नाम से जाना जाता है तथा उसके 10 वर्ष बाद सन् 2002 में जोहन्सबर्ग वर्ग में निरन्तर विकास पर हुए विश्व शिखर सम्मेल्लन ने प्रमुख भूमण्डलीय पर्यावरणीय समस्याओं को उजागर किया तथा जनसामान्य का ध्यान पर्यावरणीय क्षय की ओर आकर्षित किया है। जनता की सेवा सहयोग के बिना कोई भी सरकार निरन्तर विकास की गति प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकती और ना ही कोई अभियान सरकार द्वारा जैसे पॉलीथीन के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाना ये तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक लोगों को विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जानकारी न हो। और न ही लोग पर्यावरणीय कुप्रभावों को समझ सकते हैं। पर्यावरण को दूषित करके हम स्वयं को हानि पहुँचाते हैं न कि प्रकृति को। प्रदूषण नियंत्रण प्रोद्योगिकी की आज सम्पूर्ण संसार में अत्यधिक मांग है। यदि हम मंगलमय भविष्य का सपना साकार करना चाहते हैं तो हमें फिर से प्रकृति का साहचर्य प्राप्त करना होगा। जिसमें कहा गया है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।

सभी सुखी और स्वस्थ तभी रह सकते हैं, जबकि हमारा पर्यावरण स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक हो।

संन्द्रर्भ ग्रंथ

पुस्तक

1– कौशिक डा0 सी0पी0 — पर्यावरण अध्ययनः न्यूइज इटरनेशनल प्रा0लि0 पबलिशर्स नई दिल्ली–2005

2– बिष्ट डा0 शेर सिंह — मध्य हिमालयी समाज, संस्कृति एवं पपी0 इण्डियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्लीः 2003

3– गोयल डा0 एम0के0 — अपना पर्यावरण

4– नवानी लोकेश — उत्तरांचल इयर बुक बिनसर पब्लिशर्स कम्पनी देहरादून 2005

5– समाचार पत्र एंव पत्रिकाएं

6– इंटरनेट।